08 / 12 / 75 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

सम्पूर्णता की परख, सदा सहज अशरीरीपन का अनुभव

➢➢ केवल और केवल बादलों से ही जल ग्रहण करने वाला चातक पक्षी...

➢➢ प्यास से दम तोड़ सकता है, मगर ताल पोखरों से जल कभी ग्रहण नही करता...

➳ _ ➳ वैसे ही निरंतर बरसती ज्ञान धारा से अपने को संपन्न करती...

➳ _ ➳ मैं हर पल चैतन्य चात्रक आत्मा...

→ संसार के ताल पोखरों रुपी प्राप्तियों से

→ मुझे कोई लगाव नही...

→ रात और दिन केवल...

→ एक ही लगन और एक ही रस...

→ ज्ञान रत्नों से और याद की शक्ति से

→ खुद को सम्पन्न करती...

→ प्राप्तियों का मनन करती...

→ अतीन्द्रिय सुखो के झूले में झूलती...

- विजयी पन के नशे में चूर...
- बाप दादा की नैनो की नूर...

➳ _ ➳ मैं आत्मा मन बुद्धि से पहुँच गयी हूँ ...

➳ _ ➳ अव्यक्त फरिश्तों के देश अव्यक्त वतन में...

→ फरिश्तों की महफ़िल में,

→ चांदनी की चादर लपेटे बापदादा...

→ एक एक फ़रिश्ते को...

→ सर पर हाथ रख कर...

→ वरदान दे रहे हैं...

- विदेही भव
- समर्थी स्वरूप भव
- अशरीरी भव

→ वरदानों की शक्ति को दूर से ही मैं आत्मा...

→ अपने अंदर महसूस करती हुई...

→ अशरीरी भव के वरदान से सहज ही...

→ अशरीरीपन महसूस कर रही हूँ...

→ मुझ फ़रिश्ते की चमकीली...

→ चांदनी सी झिलमिलाती ड्रेस...

→ जिस पर रंग बिरंगे हीरों का महीन चूर्ण...

→ बापदादा मेरे ऊपर बिखेर रहे हैं...

- सात रंगों का चूर्ण...
- गुणों का और शक्तियों का चूर्ण...
- गुणों और शक्तियों से भरपूर होकर..
- खुद की ही खूबसूरती को,
- चमक को...
- फक्र से निहारती हुई...

➳ _ ➳ सम्पूर्णता को प्राप्त करती मैं आत्मा,

➳ _ ➳ फ़रिश्ते की काया को छोड़ कर...

➳ _ ➳ उड़ चली परम धाम की ओर...

→ गहरे लाल प्रकाश में शिव बिंदु की किरणों का झूला...

→ किरणों के झूले पर झूलती हुई...

→ एकटक निहार रही हूँ उस ज्योति के नूर को...

→ गहराई से महसूस कर रही हूँ...

→ परम धाम की...

- पवित्रता को...
- शांति को,
- नीरवता को...
- शांति के अनहद नाद को...

➳ _ ➳ परम धाम के ये गहरे अनुभव लेकर मैं आत्मा...

➳ _ ➳ लौट आई हूँ वापस सूक्ष्म देह में...

→ बाप दादा के साथ मैं आत्मा अब विश्व सेवा पर...

→ देख रही हूँ आत्माओं की अलग अलग अवस्थाओं को...

- सबको समर्थी स्वरूप बना रही हूँ...
- अनुभवी मूर्त बना रही हूँ...

➳ _ ➳ मैं आत्मा वापस अपने स्थूल देह में...

→ मैं आत्मा सर्वशक्ति संपन्न हूँ...

→ सर्वगुण संपन्न हूँ...

- सदा सहज ही
- अशरीरीपन की अनुभवी बन गयी हूँ ...
- सेकेण्ड में देह में...
- और अगले ही पल परम धाम में...
- बिंदु स्वरूप मैं आत्मा...